IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"बौद्ध धर्म का समाज पर प्रभाव एक ऐतिहासिक अध्ययन"

वन्दना द्विवेदी

शोधार्थी

प्राचीन इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग

नेहरू ग्राम भारती प्रयागराज (मानित विश्वविद्यालय)

इस शोध पत्र में, समाज पर बौद्ध धर्म के प्रभाव का ऐतिहासिक अध्ययनकिया गया है । 600 ईसा पूर्व से 400 ईसा पूर्व तक की अवधि भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण अवधि है । इस अवधि में, भारत के इतिहास-आकाश पर युग-परिवर्तन की घटनाएं हुई । इन घटनाओं ने भारत के राजनितिक और धार्मिक जीवन को नए आयाम दिए । 'आज पूरी दुनिया में हर जगह हिंसा, उन्माद, निराशा, घृणा और द्वेष की बातें की जाती हैं । इसके कारण न केवल अस्थिरता बढ़ रही है, बल्कि विकास की गति भी धीमी हो रही है । यहाँ तक कि इन्सान भविष्य पर भी सवाल उठा रहे हैं । आज हम भयानक क्षणों में जी रहे हैं और मनुष्य मनुष्य का दुश्मन बन रहा है । यदि हम इन चुनौतियों पर ध्यान देते हैं और इसके निवारण के लिए प्राचीन परम्पराओं और पानी के विचारों को देखते हैं, तो भगवान् बुद्ध के विचार हमारे सामने एक रत्न की तरह दिखाई देते हैं जिनकी प्रकाश किरणें हमारे भ्रम के अंधेरे को दूर कर सकती हैं । लेखक के विचार में, भगवान बुद्ध की कई प्रथाओं, विचारों और ज्ञान मानव कल्याण के लिए मील के पत्थर हैं क्योंकि भगवानबुद्ध ने एक गैर-समाजवादी समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है । भगवान बुद्ध ने कहा है कि घृणा कभी समाप्त नहीं होती है बल्कि केवल प्रेम घृणा को समाप्त कर देता है । "एक समाधान खोजने के लिए, यदि हम अपने पारम्परिक आदर्शों की विरासत को देखते हैं, तो भगवान बुद्ध के विचार हमारे सामने एक रत्न की तरह आते हैं जिनकी प्रकास किरणें हमारे मतिभ्रम के अंधेरे को दूर कर सकती हैं ।[1]

बौद्ध समाज :-

इस बारे में सामाजिक जानकारी हमें कल ब्राह्मण साहित्य से मिली । उपनिषदों के बाद ब्राह्मण साहित्य का एक बड़ा हिस्सा एक सूत्र के रूप में लिखा गया था । बौद्ध धर्म के प्रचार का मुकाबला करने के लिए सूत्र साहित्य का निर्माण किया गया था । सूक्त साहित्य में कल्प सूत्र का विशेष महत्व है । कल्प सूत्र को तीन भागों में बांटा गया है श्रुत सूत्र गृहय सूत्र और धर्म सूत्र उसी तरह जैसे सामाजिक स्रोत सामाजिक और धार्मिक व्यवस्था को भी • यादों में प्रस्तुत किया गया था । फिर भी दोनों में अंतर है । सूत्र साहित्य गद्य और पद्य दोनों में है जबकि स्मृति साहित्य पद्म में ही है । सूत्र और स्मृति साहित्य को एक साथ शास्त्र कहा जाता है । गौतम धर्मसूत्र सबसे प्राचीन माना जाता है । प्रारंभ मे गौतम बौधायन, वसिष्ठ और आपस्तम्ब के धर्मसूत्र लिखे गए थे । गौतम और वशिष्ठ उत्तर भारत से है जबकि बौधायन और आपस्तम्ब दक्षिण भारत से हैं । कुछ मुद्दों पर इन सूत्रों में भी मतभेद है । उदाहरण के लिए गौतम और बौधायन आठ प्रकार के विवाहों का उल्लेख करते हैं जबकि आपस्तम्ब सूत्र में केवल छह प्रकार के विवाहों का उल्लेख है उसी तरह बौधायन बड़े बेटे को उतराधिकार में एक बड़ा अंग दिए जाने की 4 वकालत करते हैं जबकि आपस्तम्ब इस तथ्य को स्वीकार नहीं करते हैं । इसी तरह गौतम ब्राह्मण को एक विशिष्ट स्थिति में ब्याज पर पैसा देने का अधिकार देता है, अर्थात यदि यह एक मध्यस्थ के माध्यम से किया जाता है । तब वह ब्राह्मण को कृषि और वाणिज्य में व्यापार करने का अधिकार देता है । दूसरी ओर, बौद्ध धर्म समुद्र - यात्रा की महत्वपूर्ण गतिविधि की निंदा करता है और इसे अधर्म

कहता है । वर्ण व्यवस्था का जन्म इसी काल में हुआ था । समाज का दवन्द्वात्मक ढाचा टूट गया और फार्मूलाबद्ध साहित्य ने जाति के आधार पर समाज पर शासन करने की कोशिश की ।[2]

एक ही अपराध के लिए चार वर्णों को अलग अलग दंड निर्धारित किया गया था । ब्राह्मणों को कम से कम सजा - दी जाती थी और शूद्रों को सबसे ज्यादा सजा दी जाती थी । इसी तरह ब्याज की राशि भी अलग दिखती थी । क्षत्रिय वर्ण की प्रतिष्ठा अब बढ़ गई थी क्योंकि लोहे के औजार अब युद्ध के रूप में इस्तेमाल किए जा रहे थे । उसी तरह कृषि उपकरण और उत्पादन के विकास के साथ वैश्य वर्ण की आर्थिक क्षमता भी बढ़ी और बड़े गृहिणिया अस्तित्व में आई ।

परिवार :-

परिवार के मुखिया के अधिकारों में वृद्धि हुई । वह अपने बेटे को संपति के अधिकार से वंचित कर सकता था । सूत्र साहित्य में पिता पुत्र को देने या बेचने का संकेत है ।

महिलाओं की स्थिति :-

पाणिनि ने कुमार शब्द का प्रयोग अविवाहित लड़की के लिए किया है । जिस समय वह विवाह के योग्य हो गई उस समय उसे वस्या कहा जाता है । जिस लड़की ने अपनी मर्जी से पति चुना उसे पतिव्रत कहा जाता था । आमतौर पर महिलाओं की स्थिति में गिरावट आई । दहेज प्रथा का प्रचलन शुरू हुआ । स्त्रियाँ पुरुषों के अधीन थी । उत्तराधिकार में भी उनके साथ भेदभाव किया गया । आपस्तम्ब बेटी को पिता की संपति का उत्तराधिकारी मानता है जब उसके पास कोई अन्य वारिस नहीं होता है । सती प्रथा के साहित्यिक साक्ष्य पहली बार तब पाप्त हुए है जब एक ग्रीक लेखक उतर पश्चिम में इस प्रथा पर चर्चा करता है दूसरी ओर महाभारत में पाडव की पत्नी मादी के जुड़ने की चर्चा है ।[3]

दास प्रणाली :-

इस अवधि के दौरान दास प्रणाली प्रचलित थी । विनय पिटक में तीन प्रकार के दासों की चर्चा की गई है- । घर में नौकरानी दवारा उत्पन्न 2 युद्ध में बंदी बनाया गया 3 पैसे से खरीदा गया । चैथे प्रकार के दसा (स्वेच्छा से दास बनने पर दीर्घायु में चर्चा की जाती है ।

राजसत्ता का संविदात्मक (समझौता) सिद्धांत :-

यह बौदध विचारकों दवारा प्रतिपादित है और यह महासमेंट की अवधारणा पर आधारित है । इसका आधार बौदध ग्रन्थ दीघ निकया है । इस युग में राजशाही के अलावा गणतंत्र थे हम इन्हें गण या सगा के रूप में जानते है । गणतंत्र में वास्तविक शक्ति इकाइया कुलीनतंत्र में निहित थी । शाक्य और लिच्छवी गणराज्यों में शासक वर्ग एक ही गोत्र और एक ही वर्ण के थे । वैशाली के लिच्छवियों की सभा में 7707 सदस्य थे जिन्हें राजा कहा जाता था । लेकिन ब्राह्मण इसमें शामिल नहीं थे । उदाहरण के लिए मौर्योत्तर काल में ब्राह्मणों और क्षत्रियों के पास मालव और झुटो के गणतंत्र में नागरिकता थी. लेकिन दास और शूद्र नहीं । पंजाब में व्यास नदी के आसपास एक गणतंत्र था जिसके सभागार में ऐसे सदस्य हो सकते थे जो कम से कम एक हाथी दे सके । शाक्य और लिच्छवियों का प्रशासन सरल था इसमें राजा राजा सेनापति और भाडागारिक (कोषाध्यक्ष) शामिल थे । ग्रीक लेखकों के अनुसार ए पी पाताल में एक विशिष्ट प्रकार की व्यवस्था थी राज्य की । इसमें दो वंशानुगत राजाओं ने युद्ध के दौरान और शांति के साथ शासन किया शासन वृद्ध लोगों की एक परिषद दवारा शासित था । इसी तरह सुभूति और अबष्ठ गणराज्य में राज्य ने बच्चों की परवरिश का जिम्मा संभाला ताकि बच्चे स्वस्थ पैदा हो सके । मुशिक वश एक ऐसा राज्य था जहाँ दास नहीं पाए जाते थे ।[4]

समाज पर बौद्ध धर्म का प्रभाव :-

यह काल धार्मिक दृष्टि से भारत के दो प्रभावशाली धर्मा के उदय का युग है । ये धर्म जैन और बौद्ध धर्म है । ये दोनों धर्म पारंपरिक वैदिक धर्म की मान्यताओं जैसे कर्मकार्ड त्याग आदि के खिलाफ थे । जैन धर्म के प्रणेता ऋषभदेव थे जो पहले तीर्थकर थे । जैन धर्म में कुल 24 तीर्थकर है जिन्होंने जैन धर्म का प्रचार किया । बौद्ध धर्म के प्रणेता महान गौतम बुद्ध थे जिनके व्यक्तित्व और कार्य का न केवल भारतीयों पर प्रभाव पड़ा बल्कि वे भारत के बाहर भी व्यापक रूप से फैले आज भी भारत के बाहर कई देशों

जैसे चीन तिब्बत कोरिया श्रीलंका जापान आदि में इस महान व्यक्तित्व के समर्थकों और अनुयायियों की एक बड़ी आबादी है. आज भी भारत में जन्म और जीवन से जुड़े कई पवित्र स्थान है गौतम बुद्ध को भारतीयों और भक्तों के लिए पवित्र स्थान के रूप में जाना जाता है । अधिक समय बीत चुका है । लेकिन साडे (भिक्षुओं ने सदियों तक बुद्ध की शिक्षाओं को संरक्षित किया और अपने पूरे जीवन को इसके प्रचार में समर्पित कर दिया ताकि पृथ्वी पर रहने वाले मनुष्यों को आत्मज्ञान प्राप्त करने का सही रास्ता दिखाया जा सके । यह ज्ञान की परंपरा में एक क्रांतिकारी घटना थी, जिसने मानव समाज के सामने जीवन की एक नई शैली प्रस्तुत की ।

बौद्ध विचार के प्रति समर्पित शिष्यों में अग्रिका धर्मपाल नाम का एक शिष्य भी था । श्रीलंका के इस बेटे ने 1891 में भारत में महाबोधि सोसाइटी नामक एक संस्था की स्थापना की और बौद्ध धर्म को पुनर्जीवित किया ।[5]

ज्ञान का संशोधन :-

दो हजार और पांच सौ साल पहले महात्मा बुद्ध ने पाच ब्राह्मण तपस्वियों और बनारस के बाद के श्रेष्ठ पुरुषों को धम्म (धर्म) का उपदेश दिया था । जब वे दीक्षा प्राप्त करने के बाद शिष्य बने तो बुद्ध ने उन्हें भारत के विभिन्न राज्यों में इस धर्म के उपदेश के रूप में भेजा ।

जाओ और अच्छे आचरण की इस खुशखबरी का ऐलान करो जो शुरू में तो मीठी है. बीच में भी मीठी है । और अंत में भी इस धर्म को देवताओं और पुरुषों के करुणा के सुख और कल्याण के लिए प्रचारित करो । विश्व एक ही मार्ग पर एक साथ दो का पालन न करें । महात्मा बुदध की उपरोक्त शिक्षाएं सभी कल्याण से परिपूर्ण है और मानवता की सीट तैयार करती है ।

ज्ञान का प्रसा :-

अच्छे आचरण (धर्मनिष्ठा) पर विशेष जोर देते हुए बुदध ने अपने तपस्वी शिष्यों से कहा कि ये दस नियमों का सख्ती से पालन करे हत्या करना न चोरी करना न पीना दोपहर को न करता नापना गाना और खेलना और अन्य साधनों से बचना मनोरंजन के लिए सौदर्य वृद्धि के लिए माता र प्रसाधन आदि के उपयोग से दूर रहने के लिए अधिक मूल्यवान आसन बिस्तरों आदि का उपयोग न करने के लिए और न ही यादी और सोने का उपयोग करने के लिए ।[6]

बौद्ध धर्म के प्रारंभिक काल में बुद्ध शिष्यों के लिए अग्रणी थे. लेकिन बाद में वे बौद्ध धर्म में एक मुक्तिदाता बन गए । उनकी प्रसिद्धि फैल गई और उन्हें मनुष्यों के उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार किया गया. अर्थात उनकी कृपा से निर्वाण प्राप्त होगा ।

बुदध जगह-जगह लोगों से मिलते उन्हें बाँध धर्म सिखाते और उन्हें अपना अनुयायी बनाते । उन्हें धर्म के पक्ष में जनमत तैयार करने में भी अपार सफलता मिली । उन्होने 45 वर्षो तक लगातार इस धर्म का प्रचार करना जारी रखा और आखिरकार 80 वर्ष की आयु में उनकी मृत्यु मालो गणराज्य की राजधानी कुसीना में हुई ।

बौद्ध धर्म द्वारा प्रस्तुत जीवन दृष्टि :-

अपने अहिसक अनुयायियों को बुद्ध भगवान की सलाह है कि घृणा कभी भी घृणा करना नहीं छोड़ती, लेकिन केवल प्रेम को मिटा देती है । आधुनिक बमों का एकमात्र उत्तर दयालुता है । ये देश मानवाधिकारों के लिए मील का पत्थर साबित हो सकते हैं ।[7] अगर कोई पढ़ना लिखना सीखना चाहता है तो उसे स्कूल में दाखिला लेना होगा । इसी तरह शरीर को स्वस्थ और मजबूत रखने के लिए जिम जाना पड़ता है । योग और प्राणायाम सीखने के लिए किसी योग विद्यालय जाना पड़ता है । इसी प्रकार विपश्यना की तकनीक को सीखने के लिए जो बुद्ध की शिक्षाओं का सार है. किसी को विपश्यना योगाध्याय केंद्र में जाना होगा ।

विपश्यनाः मानव कल्याण के लिए प्रशस्त मार्ग

यदि ध्यान का उद्देश्य केवल मन को एकाग्र करना है, तो व्यक्ति को योग ध्यान की तकनीक सीखनी चाहिए, जिसके लिए वह गुरु से ध्यान एकाग्रता का मंत्र या भाव (पैटर्न) प्राप्त करता है । इसका अभ्यास घर पर भी किया जा सकता है । इस तकनीक से माइडफुलनेस प्राप्त होगी. मन की एकाग्रता प्राप्त होगी और यहां तक कि मन की सलाह भी शुद्ध होगी । लेकिन विपश्यना के साथ न केवल मन की सतह को साफ किया जाता है बल्कि यह एक तरह से सर्जरी की तरह मन का गहन मयन है । यह

अपनी अंतरात्मा को भेदकर मन को शुद्ध करता है क्योंकि वही स्थान जहां से कलुष आता है और उसे शुद्ध करना आवश्यक है । असंख्य जन्मो और जन्मों में मन की गहराइयों में ये दुख भरी भावनाएं जमा होती है । उन लोगों के बारे में भी यही कहा जा सकता है जो पिछले जन्मों में विश्वास नहीं करते हैं कि ये उदास भावनाए इस जीवन के दौरान जमा होती है । मन की गहराई में अर्थात् मन भीतर की उदासीन भावनाओं के इस तरह के उद्भव के परिणामस्वरूप दास बन जाता है । यह वास्तव में एक महान बंधन है ।[8] यही कारण है कि एक व्यक्ति को कणों के इस बंधन से मुक्त होना है और उदास भावनाओं के जन्म के बाद जन्म के समय में बढ़ते पैटर्न को बदलना है । इसलिए इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए मन को बहुत अच्छी तरह से शुद्ध करना आवश्यक है. जिस तरह एक बीमारी को दूर करने के लिए सर्जरी की आवश्यकता होती है ।

इसलिए यह किसी भी तरह के दूषित वातावरण से मुक्त स्थिति में ठीक से सीखा जा सकता है । इसके लिए इसे न केवल पर्यावरण या वायुमंडलीय दूषित वातावरण से अलग किया जाना चाहिए बल्कि कण पदार्थ के परिणामस्वरूप उत्पन्न दूषित वातावरण से भी बचना चाहिए ।[9]

नैतिक जीवन जीने और सभी को मानवीय सम्मान देने से ही विपश्यना की तकनीक सीख सकते हैं । मन पर नियंत्रण रखकर नैतिक जीवन जिया जा सकता है । मन को जीतने और मन को शुद्ध करने के लिए किसी का जीवन नैतिकता पर आधारित होना चाहिए । मनुष्य को कोई भी मुखर या शारीरिक गतिविधि नहीं करनी चाहिए जो दूसरों की शांति को भग करे और उनके सूखे में बाधा डाले । भीतर से एक कार्य करने के लिए व्यक्ति के लिए एक स्थिति की आवश्यकता होती है. जिसके तहत भले ही पुरुषवादी भावनाओ का वेग बढ़ जाता है वह थरथराने वाला नहीं है उसे भावनाओं को बढ़ाने में सक्षम नहीं होना चाहिए और कलुष का ज्वार नहीं होना चाहिए मन में हड़कंप मच गया । विपश्यना की स्थिति में व्यक्ति पल-पल अपने बारे में सच्चाई देखता है ।

संदर्भ 2303363_232127

1. रोमिला थापर भारत का इतिहास दिल्ली 1975 ।
2. सत्यकेतु विद्यालकार प्राचीन धार्मिक, सामाजिक और भारत का आर्थिक जीवन दिल्ली 2005 ।
3. विश्व हिंदू बौदध संघर्ष की रोकथाम और पर्यावरण चेतना के लिए पहल सवाद (बोधगया) ।
4. विभा उपाध्याय अभिलेखागार संगीतशास्त्र और सरक्षण एक समीक्षा, जयपुर. 2012 ।
5. शिव रक्षा सुलूक सामाजिक रूप से व्यस्त बौदध धर्म दिल्ली 2005 ।
6. महानाय 14 वे दलाईलामा फोटो और परिचय ।
7. जिलेनरोवेल थेम्स और हडसन लिमिटेड लदन । 1990 (pp. 53, 54, 55) ।
8. खोए हुए बुद्ध डॉ राजेंद्र प्रसाद सिंह कौटिल्य बुक्स नई दिल्ली की खोज करें ।
9. बौद्ध धर्म और मानवाधिकार, मानवाधिकार आयोग, भारत सरकार ।